P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से हिन्द महासागर का स्त्रातेजिक महत्व एवं भारतीय सुरक्षा

बिरेन्द्र सिंह जयाड़ा
शोध अधिकारी,
रक्षा स्त्रातेजिक एवं
भू–राजनीतिक अध्ययन
विभाग,
हे0न0ब0ग0के0विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढवाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

हिन्द महासागर विश्व का तीसरा बड़ा महासागर जो कि कुल 749.2 लाख वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है। ऑस्ट्रेलिया से लेकर दक्षिण अफ्रीका तक तमाम छोटे–बड़े देशों के तटों को स्पर्श करने वाला महासागर अपनी विलक्षण विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में महाशक्तियों की भूमिका के कारण हिन्द महासागर विश्व रंगमंच पर चर्चा में है, जो महाशक्तियों का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। इसी परिप्रेक्ष्य में अमेरिकी विचारक एल्फ्रेड थेयर महान ने कहा था कि–''21वीं सदी में दुनिया के भाग्य का फैसला समुद्र में ही होगा''। महाशक्तियों के कारण हिन्द महासागर क्षेत्र को भारत ही नहीं बल्कि विश्व के छोटे–बड़े देशों की चिंता का विषय बना हुआ है। स्त्रातेजिक परिप्रेक्ष्य में तमाम बड़ी शक्तियों की प्रतिस्पर्धा को देखते हुए सामुद्रिक नीति के सन्दर्भ में के.एम. पणीकर का कहना था कि–''हिन्द महासागर के विषय में भारत की दीर्घकालिक और अल्पकालिक दोनों तरह की नीति जरूरी है''। इस क्षेत्र में अमेरिका तथा रूस से अधिक प्रभुत्व जमाने की चेष्ठा में चीन भारत के लिए सैनिक एवं आर्थिक क्षेत्र में सबसे बड़ी चुनौती का विषय बना हुआ है। समुद्री क्षेत्र में अपने हितों की रक्षा के लिए भारतीय नौसेना का विकास अनिवार्य है। नौसेना पर युद्ध और शान्ति दोनों ही समय सीमा की हितों और उसकी परिसम्पतियों की जिम्मेदारी होती है। सुरक्षात्मक वातावरण के सन्दर्भ में आवश्यक है कि भारतीय नौसेना के पास शक्ति एवं साधन हो ताकि भारतीय सामुद्रिक नीति को अपने अनुसार लागू कर सके।

मुख्य शब्द : भूराजनीतिक, सेन्टकाम, सैन्यीकरण, एक्ट ईष्ट, समुद्री संसाधन, हिमतक्षेस, पनडुब्बी, तारपीडो, विमानवाहीपोत ।

प्रस्तावना

हिन्द महासागर विश्व का तीसरा बड़ा महासागर जो कि कुल 749.2 लाख वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है। ऑस्ट्रेलिया से लेकर दक्षिण अफ्रीका तक तमाम छोटे–बड़े देशों के तटों को स्पर्श करने वाला महासागर अपनी विलक्षण विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में महाशक्तियों की भूमिका के कारण हिन्द महासागर विश्व रंगमंच पर चर्चा में है, जो महाशक्तियों का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। इसी परिप्रेक्ष्य में अमेरिकी विचारक एल्फ्रेड थेयर महान ने कहा था कि–''21वीं सदी में दुनिया के भाग्य का फैसला समुद्र ही होगा''। महाशक्तियों के कारण हिन्द महासागर क्षेत्र को भारत ही नहीं बल्कि विश्व के छोटे–बड़े देशों की चिंता का विषय बना हुआ है। स्त्रातेजिक परिप्रेक्ष्य में तमाम बड़ी शक्तियों की प्रतिस्पर्धा को देखते हुए सामुद्रिक नीति के सन्दर्भ में के.एम. पणीकर का कहना था कि–''हिन्द महासागर के विषय में भारत की दीर्घकालिक और अल्पकालिक दोनों तरह की नीति जरूरी है''। इस क्षेत्र में अमेरिका तथा रूस से अधिक प्रभुत्व जमाने की चेष्ठा में चीन भारत के लिए सैनिक एवं आर्थिक क्षेत्र में सबसे बड़ी चुनौती का विषय बना हुआ है। समुद्री क्षेत्र में अपने हितों की रक्षा के लिए भारतीय नौसेना का विकास अनिवार्य है। नौसेना पर युद्ध और शान्ति दोनों ही समय सीमा की हितों और उसकी परिसम्पतियों की जिम्मेदारी होती है। सुरक्षात्मक वातावरण के सन्दर्भ में आवश्यक है कि भारतीय नौसेना के पास शक्ति एवं साधन हो ताकि भारतीय सामुद्रिक नीति को अपने अनुसार लागू कर सके।

विश्व स्त्रातेजिक दृष्टिकोण से भारत व हिन्द महासागर की अवस्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। भारत दक्षिण एशिया का बहुत बड़ा राष्ट्र है, जो हिन्द महासागर के मध्य में स्थित है। इसकी तटीय रेखाऐं हिन्द महासागर के द्वारा निर्धारित होती है। हिन्द महासागर 30^0 दक्षिण अक्षांश से लेकर 40^0 दक्षिण अक्षांश तथा 20^0 पूर्वी देशान्तर से लेकर 115^0 पूर्वी देशान्तर तक फैला है।

जिसका कुल क्षेत्रफल 749.2 लाख वर्ग किलोमीटर है, जो कि अफ्रीका और एशिया के कुल क्षेत्रफल का बराबर है। हिन्द महासागर से अरब सागर, बंगाल की खाड़ी, मोजाम्बिक चैनल और वृहद आस्ट्रेलिया की खाड़ी जुड़ी है। इसका विस्तार उत्तर से दक्षिण तक 6500 मील और पूर्व से पश्चिम तक लगभग 600 मील चौड़ा है।[1]

इस क्षेत्र में बड़ी शक्तियों की प्रतिस्पर्धा के कारण भारतीय समुद्र नीति के सन्दर्भ में पणीकर का यह भी कहना था कि, एक सुनिश्चित और प्रभावशाली सामुद्रिक नीति के बिना भारत की स्थिति विश्व में कमजोर और दूसरों पर निर्भर रहेगी और उसकी स्वतंत्रता उस राष्ट्र के अधीन निर्भर रहेगी, जो भारतीय समुद्र पर नियन्त्रण करने में समर्थ होगा। नौसेना के कारण अनेक राष्ट्र जैसे ब्रिटेन, फ्रांस, पोलैण्ड, इटली, जर्मनी, अमेरिका का बड़ा महत्व है। सुरक्षात्मक वातावरण के वर्तमान समय में राष्ट्रीय हित व चुनौतियों के मध्य आवश्यक है कि भारतीय नौ सेना के पास हर तरह की चुनौतियों का सामना करने के लिए पर्याप्त नौ सैन्य शक्ति एवं संसाधन हो ताकि भारतीय सामुद्रिक नीति को अपने अनुसार लागू कर सकें।[2]

शीत युद्ध के समय हिन्द महासागर महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा का मुख्य केन्द्र रहा है। भारत सहित सभी प्रमुख क्षेत्रीय देशों ने इस क्षेत्र की शान्ति के लिए प्रयास किया, लेकिन शीत युद्ध काल में महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा व तनाव को देखते हुए ऐसा असम्भव प्रतीत होता था, कि यह क्षेत्र महाशक्तियों के नौ सैनिक गतिविधियों से मुक्त हो सकेगा। शीत युद्ध की समाप्ति सोवियत विघटन (25 दिसम्बर 1991) के पश्चात् अमेरिका के सामने सोवियत प्रसार का खतरा भी समाप्त तो हुआ, लेकिन हिन्द महासागर क्षेत्र में उसके नौ सैनिक अड्डे सक्रिय रहे हैं।[3]

भू–राजनीतिक दृष्टिकोण से विगत कुछ वर्षों से इसका महत्व काफी बढ़ गया है। आर्थिक सैनिक व राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता का यह क्षेत्र विवादग्रस्त बन गया है। शक्ति रिक्तता के आधार पर अमेरिका ने हिन्द महासागर में अपनी सैन्यीकरण की नीतियों को तीव्र कर दिया। यद्धपि अमेरिका 1948 से ही इस प्रकार की नीतियों का अनुसरण करता आया। इरान–ईराक युद्ध के समय 1983 को सेन्टाकाम नाम से खाड़ी में एक केन्द्रीय कमाण्ड के गठन से अमेरिका ने सामरिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इस क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी। आज अमेरिका सबसे अधिक शक्तिशाली एवं सेना में उसका प्रथम स्थान है।[4]

अध्ययन का उददेश्य

हिन्द महासागर प्रशान्त एवं अटलांटिक महासागर के बाद विश्व का तीसरा बडा महासागर है जो कि आज विश्व राजनीतिक एव सैन्य गतिविधियों का क्रेन्दु बिन्दु बना हुआ हैं। चीन ने अपनी सैन्य शक्ति एंव कूट नीति को सुदूर पूर्व से पश्चिम तक बढ़ा लिया है। वह अपने संसाधनो तथा बाजारों पर भी मजबूत दाबेदारी कर चुकाहै। अधिक से अधिक संसाधनो और बडे अर्न्तराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच बनाते हुए उसने तेजी से कदम बढायें। विश्व महाशक्ति अमेरिका को भी चीन की अनियन्त्रित ताकत का अहसास हो चुका हैं। चीन हर तरह जैसे अर्न्तराष्ट्रीय समुद्रों, अन्तरिक्ष और साइबर स्पेस हर जगह अपना स्थान बनाये हुए है।

चीन की रणनीति है कितमाम छोटे बडे द्वीपों तक अपना अधिकार कर उन पर सैनिक आर्थिक गतिविधियो के सहारे अपना नियन्त्रण एव समुद्री महाशक्ति बनकर विश्व में एकछत्र अपना नियन्त्रण स्थापित करे। अपनी सैन्य शक्ति को लेकर युद्ध पोतों एवं अत्याधुनिक हथियारों से वह युद्धाभ्या सभी करता रहता है जिससे दक्षिण एशियाई राष्ट्रों से लेकर आसियान देश भी इससे चिन्तित है। आज हमें यह लगता है कि आने वाले समय में युद्ध की स्थिति छोटे या बडे स्तर पर क्यों न हो, युद्ध लडना पड सकता है। अतः हिन्द महासागर मे चल रही चीनी गतिविधियों को देखते हुए आवश्यक होगा कि भारत अपनी नौसैन्य शक्ति को अधिक शक्तिशाली बनाये जिससे चीनी चुनौतीयों का सामना कर सके।

हिन्द महासागर में चीन की कूटनीतिक चाल

हिन्द महासागर क्षेत्र में अमेरिका व रूस से अधिक प्रभुत्व जमाने की चेष्ठा में चीन सबसे आगे है।[5] समुद्री महत्व को देखते हुए चीन अपनी शक्ति के द्वारा भारत को घेरने की रणनीति के साथ अपनी नौ सेना का विस्तार कर रहा है। इस क्षेत्र में बन्दरगाहों की सुविधा के कारण अनेक छोटे–बड़े देशों से सम्बन्ध स्थापित कर रहा है।[6] इसमें श्रीलंका, मालदीव, सेशल्स और मारीशस आदि शामिल है। सेशल्स ने तो चीन की नौ सेना की पुनः आपूर्ति की सुविधा प्रदान करके राहत दी है। भारत और चीन की सैन्य क्षमताओं में उभार के साथ–साथ दोनों देशों ने एक दूसरे के खिलाफ मोर्चाबन्दी करते आये हैं।[7]

अपनी नौ सेना के व्यापक विस्तार नीति के कारण चीन अपने नौ सैनिक अड्डे सुदूर हैनान द्वीप तक फैला चुका है। जहां उसने नौ सैनिक अड्डे का निर्माण कर दिया यहां पनडुब्बियां स्थापित करने के लिए विमान का ही स्ट्राइक ग्रुप को रखने पर अमादा है। यहीं से प्रशान्त एवं हिन्द महासागर में शक्ति प्रदर्शन करने की योजना है। अपने आर्थिक व सैन्य शक्ति की व राजनयिक चतुराई से म्यामांर, श्रीलंका और पाकिस्तान में वर्चस्व कायम कर सुदूर अफ्रीका के जिबूती में अपना नौ सैनिक अड्डा स्थापित कर लिया। दक्षिण पूर्व एवं दक्षिण चीन सागर में वह पहले से ही अपना अधिकार मानता है। जिसके कारण इस क्षेत्र में कई देशों से उसके सम्बन्धों में तानातनी है। यहां तक कि दक्षिण चीन सागर में वह भारत का पूर्ण रूप से विरोध करता है। अण्डमान–निकोबार द्वीप से 20 किलोमीटर उत्तर में बंगाल की खाड़ी स्थित कोको द्वीप को म्यांमार ने 1994 में चीन को सौंप दिया था, जहां चीन ने सैनिक अड्डा बना लिया। इसी तरह बांग्लादेश के चटगांव बन्दरगाह का विस्तार चीन कर रहा है, जबकि म्यांमार के सिटवे बन्दरगाह का आधुनिकीकरण का कार्य भारत कर रहा है। सेशेल्स में भी चीन नौ सैनिक अड्डे के बारे में कहा जाता है कि यह अड्डा उसने समुद्री लुटेरों से अपने जहाजों की रक्षा के लिए विकसित किया, लेकिन यह

उसको भारत की समुद्री घेरेबन्दी का एक हिस्सा मानता है।[8]

उधर जहां तक पाकिस्तान का प्रश्न है पाकिस्तान के दक्षिण–पश्चिमी भाग में बलूचिस्तान प्रान्त में अरब सागर के किनारे स्थित ग्वादर बन्दरगाह जो कि 60 किलोमीटर चौड़ी तटवर्ती पट्टी (मकरान तट) पर स्थित है रणनीतिक महत्व के इस बन्दरगाह के विकास के लिए पाकिस्तान लम्बे समय से प्रयास कर रहा था। अफगानिस्तान में अस्थिरता के दौर में जब अमेरिका की उपस्थिति बढ़ी तब पाकिस्तान ने चीन के सहयोग से ग्वादर को विकसित करने का काम शुरू कर दिया। यहां न सिर्फ पाकिस्तान अपितु अफगानिस्तान, चीन और मध्य एशिया के देशों (तुर्कमेनिस्तान, उजवेकिस्तान, कजाकिस्तान व किर्गीजिस्तान) के साथ तथा झिंझियांग (चीन) के लिए विशेष आर्थिक एवं स्त्रातेजिक महत्व रहा है।[9] इस पोर्ट के साथ ही आसपास के शहरों से नेटवर्क बनाने का काम भी चीनी कम्पनी को दिया गया है। ग्वादर से पाक अधिकृत कश्मीर के रास्ते चीन के झिझियांग प्रान्त तक सड़क निर्माण कार्य किया जा रहा है।

भारतीय नौ सेना की उपस्थिति

भारतीय नौ सेना सन् 1612 से ही अस्तित्व में है, आजादी के वक्त ब्रिटिश परम्पराओं के आधार पर नौ सेना तीनों सेना में वरिष्ठ, शक्तिशाली मानी गई। आज विश्व में भारतीय नौ सेना सातवें स्थान पर है। भारतीय नौ सेना की प्रमुख जिम्मेदारी समुद्री सीमाओं कही सुरक्षा करना है। तीनों सेनाओं का आपसी सहयोग, देश की राजनीतिक, आर्थिक व सुरक्षात्महक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शान्ति एवं युद्ध काल में समुद्री सीमाओं की निगरानी के साथ, तट रक्षक बलों के साथ उचित कार्यवाही करना आदि है। साथ ही अन्य दायित्वों में समुद्री क्षेत्रों में पड़ोसी देशों की मदद, आपदा क्षेत्रों में मदद, सहयोग एवं राहत व बचाव में अपना पूर्ण रूप से योगदान आदि प्रमुख है।

वर्तमान समय में गैर परम्परागत आतंकी खतरों का विशेषकर कर समुद्री रास्ते प्रमुख होते हैं। भारतीय नौ सेना ऐसे खतरों से निपटने के लिए सजग रहती है। अतः भारतीय नौ सेना की जिम्मेदारी व्यापक हो जाती है। भारतीय नौ सेना सरकार की 'एक्ट ईष्ट' नीति बन गयी है। इस क्षेत्र में नौवहन तथा समुद्री लुटेरों से व्यापारिक पोतों की सुरक्षा का दायित्व एवं कार्यवाही से इस क्षेत्र में पाइरेशी की समस्याओं में भी काफी कमी आ रही है।

नौ सेना एक सशक्त क्षेत्रीय शक्ति के साथ पूर्ण रूप से जिम्मेदारी का निवर्हन जरूरी है। यह तभी महत्वपूर्ण हो सकती है, जब इसकी भूमिका में मौजूद वैटलग्रुप (विमान वाही पोतों) का होना जरूरी है। विशेष रूप से हमें तीन विमान वाही पोत मध्य एवं पश्चिमी क्षेत्र की सुविधा के लिए आवश्यक है, ताकि हिन्द महासागर क्षेत्र को हर सम्भव सुरक्षित रखा जा सके। अपनी रणनीति एवं राष्ट्रीय सुरक्षा व विकास के लिए उन्नत तकनीकी, समुद्री संसाधनों का दोहन, सुदूर संवेदन संस्थान द्वारा महत्वपूर्ण सूचना उपलब्ध कराना, मुक्त व्यापार क्षेत्र, पर्यटन के विकास में बड़े पैमाने पर मुद्रा एवं रोजगार आदि प्रमुख हैं।[10]

इसके साथ ही हिन्द महासागर में आपसी सहयोग बढ़ाने के लिए प्रमुख संगठन जैसे सार्क, आसियान, खाड़ी सहयोग परिषद तथा हिमतक्षेस आदि के सहयोग से क्षेत्रीय विवादों को शान्तिपूर्ण तरीके से निपटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।[11] गुट निरपेक्ष आन्दोलन के उत्तरदायित्व व प्रभाव को बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिवर्तित परिस्थितियों में नई दिशा एवं गति प्रदान करने की बहुत बड़ी जरूरत है।

वाह्य क्षेत्र के सामुद्रिक परिदृश्य में भी भारत के भू–राजनीतिक परिवेश में तेजी से विकास हो रहा है। भारत की स्त्रातेजिक स्थिति तथा नौ सैन्य शक्ति के चलते पहले जिस गठबन्धन क्षेत्र जो एशिया पेसिफिक क्षेत्र के नाम से जाना जाता था अब इसे भारत प्रशान्त क्षेत्र के रूप में कहा जाने लगा। इसमें 4 देश भारत, जापान, अमेरिका और आस्ट्रेलिया आदि शामिल हैं। इस क्षेत्र में भारतीय नौ सेना ने ''मिशन आधारित तैनाती'' की नीति को लागू किया, विशेष रूप से मलक्का जलसन्धि, उत्तरी बंगाल की खाड़ी, उत्तरी अरब सागर, अदन की खाड़ी और हिन्द महासागर प्रमुख है।

भारत प्रशान्त क्षेत्र में भी अन्तर्राष्ट्रीय नौ सेना की गतिविधियों का केन्द्र बन रहा है, क्योंकि इस क्षेत्र में हिंसक झड़पें अधिक होती है। शान्ति एवं सुरक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय नियमों और राष्ट्रों के बीच समन्वय बनाना, नौ सेना में महिलाओं की भूमिका पर अधिक फोकस किया जा रहा है। भारतीय नौ सेना में (ISRO) प्रमुख रूप से जी सेट–6 उपग्रह आधारित ट्रैकिंग ट्रासपोण्डर लगाने की योजना पर कार्य चल रहा है, जिससे तटीय व्यवस्था मजबूत होगी। चीन अपनी दादागिरी और युद्ध का भूत सवार होकर खतरनाक स्थिति को अंजाम दे रहा है। अपनी गलत हरकतों से चीन आज भारत, वियतनाम, कम्बोडिया, ताइवान, दक्षिण कोरिया, जापान, हांगकांग, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों से क्षेत्रीय विवाद उत्पन्न करता रहा है। जापान एवं दक्षिण कोरिया ने तो चीन के इस कदम को सीधे तौर पर शक्ति प्रदर्शन और युद्धक मानसिकता का प्रतीक बताया है। पूर्वी चीन सागर में कई ऐसे द्वीप हैं जो न केवल विवादित हैं बल्कि अथाह खनिज सम्पदा की सम्भावना से भरे पड़े हैं। इसी वजह से उस पर चीन की गिद्धदृष्टि टिकी है।[12]

निष्कर्ष

चीन की कूटनीतिक चाल जो कि भारत को चारों ओर से घेरने का काम कर रहा है। दक्षिण चीन सागर से हिन्दमहासागर मार्ग द्वारा पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को चीन पाक आर्थिक गलियारे के रूप में विकसित कर रहा है जिस पर चीन की कई कम्पनियां कार्यरत हैं। अक्साई चीन क्षेत्र में सड़को का निर्माण एवं लगातार अपनी सैन्य ताकत बढ़ा रहा है। 'वन वे वन वेल्ट' का कार्य भी तीव्र गति से चल रहा है। भारतीय सीमा क्षेत्रों में लद्दाख में दौलत वेगओल्डी, गलवान घाटी, अरूणाचल प्रदेश में तवांग, सामदुरूंगचू , सिक्किम से सटा डोकलाम क्षेत्र एवं उत्तराखण्ड के बाड़ाहोती क्षेत्र में चीनी धुसपैठियों ने कई बार कब्जा करने का दुस्साहसी प्रयास किया। जिससे एशियाई क्षेत्र में टकराव

की स्थिति पैदा हो जाती है। कई बार सीमा संबंधीं विवाद सुलझाने का प्रयास नाकाम सिद्ध हुआ।

हिन्द महासागर में चीनी सेना की बढ़ती गतिविधियों को देखते हुये भारतीय नौ सेना को हैवी टारपीडो, इलैक्ट्रिक स्कोर्पिन क्लास की पनडुब्बी, ब्लैक शार्क हैवीकेट टारपीडो, नाभिकीय पनडुब्बियां, स्कोर्पिन पनडुब्बियां, एण्टीशिप तथा लैण्ड अटैक मिसाइलें आदि की अति आवश्यकता है। हमें विमानवाही जंगी बेड़ा, महत्वपूर्ण हथियार, हेलीकाप्टर, माइन काउंटमेजर पोत और पनडुब्बियों की और आवश्यकता है। लड़ाकू विमानों, रडारों की श्रृंखला, टोही विमानों एवं ड्रोन की नितान्त ज़रूरत है। मल्टीरोल हेलीकॉप्टरों का इस्तेमाल, एन्टीसबमरीन , एन्टीशिप युद्ध क्षमता वाले हेलीकाप्टरों के सी–डाकिंग(पानी में डूबे) सोनार, पनडुब्बियों की तलाश में महतवपूर्ण प्लेटफॉर्म माने जा रहे हैं क्योंकि हवा में उड़ते हेलीकॉप्टरों को पनडुब्बियॉ निशाना नहीं बना सकती। ये हेलीकाप्टर बोइंग बी–8 और समुद्री गस्ती विमानों की क्षमता के साथ जुड़कर अधिक क्षमता को बढ़ायेगा। जिससे भारतीय नौ सेना की ताकत में इजाफा होगा। नौ सेना के बन्दरगाह एवं आफशोर केन्द्र तथा आवश्यक सुविधाओं से सुरक्षा इन्तजामों को सशक्त बनाना आवश्यक है। जिससे सामुद्रिक हितों की सुरक्षा के लिए भारतीय नौ सेना के पास पर्याप्त यौद्धिक ताकत उपलब्ध होगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *गुप्त, परशुराम, स्त्रात्जिक भूगोल, पृ0सं0–142*
2. *पन्त, डॉ0 पुष्पेश, जैन, श्रीपाल, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, पृ0सं0–426*
3. *हरिशरण, हिन्दमहासागर सन्दर्भ भारतीय सुरक्षा परिदृश्य रक्षार्थ अंक–प्रथम, 1999*
4. *चारण, श्रीमती कंचन, हिमालय परिदृश्य हिन्दी महासागरीय, वॉल्यूम–तृतीय, पृ0सं0–78*
5. *शर्मा, मथुरालाल, नटाणी, प्रकाश नारायण, विदेश नीतियां, पृ0सं0–134*
6. *हरिशरण, हिन्दमहासागर सन्दर्भ भारतीय सुरक्षा परिदृश्य रक्षार्थ अंक–प्रथम, 1999*
7. *पन्त, हर्ष बी., दैनिक जागरण, दैनिक समाचार पत्र, 6 अक्टूबर, 2012*
8. *गायत्री देवी, समसामयिकी अवलोकन, अप्रैल, 2013, पृ0सं0–5*
9. *गायत्री देवी, समसामयिकी अवलोकन, अप्रैल, 2013, पृ0सं0–6*
10. *मनोरमा इयर बुक, 1998, पृ0सं0–629*
11. *स्ट्रेटेजिक एनालेसिस, मार्च, 1996, पृ0सं0–1701*
12. *विज्ञान प्रगति मासिक पत्रिका मार्च, 2014 पृ.स. 26*